एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 05, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2025)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

पशुपालन और पशुप्रजनन में महिलाओं की भूमिका

*डॉ. कच्छवे मुकुंद रमेश[1], डॉ. कोमल[2], डॉ. राजेश कुमार[3] एवं डॉ. अमित कुमार[4]

[1]पीएच.डी. शोधार्थी, पशु आनुवंशिकी एवं प्रजनन विभाग, आईसीएआर-राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल, हरियाणा, भारत

[2]सहायक प्राध्यापक, पशु पोषण विभाग, महात्मा गांधी पशुचिकित्सा महाविद्यालय, भरतपुर, राजस्थान

[3]सहायक प्राध्यापक, पशुचिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी पशुचिकित्सा महाविद्यालय, भरतपुर, राजस्थान, भारत

[4]सहायक प्राध्यापक, पशुचिकित्सा जैवरसायन विभाग, महात्मा गांधी पशुचिकित्सा महाविद्यालय, भरतपुर, राजस्थान, भारत

*संवादी लेखक का ईमेल पता: mukundrkachave@gmail.com

भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि और पशुपालन दोनों का अभिन्न योगदान है। पशुपालन न केवल भोजन, दूध, अंडा, मांस, ऊन और खाद का प्रमुख स्रोत है, बल्कि यह ग्रामीण परिवारों की स्थायी आय और रोजगार का आधार भी है। इस क्षेत्र की सबसे बड़ी ताक़त हैं महिलाएँ।

महिलाएँ परंपरागत रूप से गाय-भैंस, बकरी, भेड़ और पोल्ट्री पालन की मुख्य देखभालकर्ता रही हैं। उनके अनुभव और निरंतर जुड़ाव ने उन्हें पशुप्रजनन और पशुसुधार में भी स्वाभाविक भागीदार बना दिया है। आधुनिक समय में जब आनुवंशिक सुधार और वैज्ञानिक पशुपालन पर जोर दिया जा रहा है, महिलाओं की भूमिका और भी अहम हो गई है। इस लेख में हम विस्तार से देखेंगे कि महिलाएँ पशुपालन और पशुप्रजनन दोनों क्षेत्रों में किस तरह से योगदान देती हैं, इसका आर्थिक और सामाजिक महत्व क्या है, और किस प्रकार नीतिगत प्रयासों से उनकी भूमिका को और सशक्त किया जा सकता है।

पशुपालन में महिलाओं का पारंपरिक योगदान

- ग्रामीण भारत में महिलाएँ प्रायः घर के आस-पास स्थित पशुओं की देखभाल करती हैं
- वे पशुओं को चारा-पानी देना, दूध दुहना, बछड़ों और चूजों की देखभाल, तथा बीमार पशुओं को प्राथमिक उपचार देना जानती हैं।
- पोल्ट्री पालन में महिलाएँ अंडे संग्रहित करती हैं, चूजों को पालती हैं और स्थानीय नस्लों का संरक्षण करती हैं।

इन सभी कार्यों से यह स्पष्ट होता है कि महिलाएँ केवल पशुओं की देखभाल करने वाली नहीं, बल्कि असल मायनों में पशुपालन की प्रबंधक हैं, जो उत्पादन और सुधार की पूरी प्रक्रिया का संचालन करती हैं।

पशुप्रजनन में महिलाओं की भूमिका

(क) पशुचयन

- ग्रामीण महिलाएँ पशुओं के स्वभाव, दूध देने की क्षमता, रोग प्रतिरोधकता और प्रजनन क्षमता का प्रतिदिन बारीकी से अवलोकन करती हैं। इस निरंतर अनुभव और सूक्ष्म निरीक्षण के आधार पर वे प्रजनन हेतु बेहतर

पशुओं का चुनाव करने में सक्षम होती हैं। वास्तव में यह एक प्रकार का प्राकृतिक चयन और अनुभव-आधारित सुधार है, जिससे पीढ़ी-दर-पीढ़ी पशुधन की गुणवत्ता में सुधार होता है।

(ख) कृत्रिम गर्भाधान और आधुनिक तकनीकें

- आज कई राज्यों में महिलाएँ कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन के रूप में कार्य कर रही हैं। वे न केवल गर्भाधान की प्रक्रिया को सफलतापूर्वक संचालित करती हैं, बल्कि अब भ्रूण प्रत्यारोपण, नस्ल सुधार अभियानों और टीकाकरण कार्यक्रमों में भी सक्रिय योगदान दे रही हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि महिलाएँ केवल परंपरागत देखभाल तक सीमित नहीं हैं, बल्कि आधुनिक पशुपालन तकनीकों को भी आत्मसात कर रही हैं।

(ग) पारंपरिक ज्ञान

- ग्रामीण महिलाओं के पास देसी नस्लों के गुणधर्मों की जानकारी पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती रही है। उदाहरणस्वरूप, वे जानती हैं कि साहीवाल गाय का दूध उच्च वसा प्रतिशत वाला होता है, मुर्रा भैंस अपनी उच्च उत्पादकता के लिए प्रसिद्ध है, बरबरी बकरी की वृद्धि तेज़ होती है, और देशी मुर्गी रोग प्रतिरोधकता में श्रेष्ठ होती है। यह पारंपरिक ज्ञान जब आधुनिक वैज्ञानिक प्रजनन तकनीकों के साथ मिलकर उपयोग किया जाता है, तो पशुधन उत्पादन और संरक्षण दोनों में अत्यधिक लाभकारी सिद्ध हो सकता है।

बड़ी पशुओं में प्रजनन और महिलाओं की भागीदारी

(क) दुग्ध उत्पादन और नस्ल सुधार

- भारत आज विश्व का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक देश है, और इस सफलता में ग्रामीण महिलाओं का योगदान है। महिलाएँ प्रतिदिन पशुओं को संतुलित और पौष्टिक आहार देती हैं, समय पर गर्भाधान कराती हैं और बीमारियों से बचाव के लिए आवश्यक देखभाल करती हैं। उनके द्वारा अपनाई गई यह नियमित और सुनियोजित देखभाल न केवल दूध उत्पादन बढ़ाती है बल्कि पशुओं को स्वस्थ भी बनाए रखती है। यही नहीं, महिलाएँ अच्छे नस्ल के पशुओं को संजोकर परिवार की आय को स्थिर और टिकाऊ बनाती हैं। इस प्रकार, वे केवल दुग्ध उत्पादन में ही नहीं, बल्कि नस्ल सुधार में भी सक्रिय भूमिका निभाती हैं।

(ख) बकरी और भेड़ पालन

- बकरी पालन ग्रामीण महिलाओं के लिए कम निवेश वाला लेकिन अत्यधिक लाभकारी व्यवसाय है। महिलाएँ बकरियों की प्रजनन क्षमता, दूध उत्पादन और रोग प्रतिरोधकता का गहराई से अवलोकन करती हैं और इन्हीं अनुभवों के आधार पर बेहतर पशुओं का चुनाव करती हैं। इससे उन्हें नियमित आय प्राप्त होती है, साथ ही छोटे किसानों और भूमिहीन परिवारों को आत्मनिर्भर बनने का अवसर मिलता है। भेड़ पालन में भी महिलाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं—विशेषकर ऊन और मांस उत्पादन देने वाली नस्लों की पहचान और देखभाल में। महिलाओं का यह अनुभव और संवेदनशील दृष्टिकोण इन पशुपालन गतिविधियों को न केवल लाभकारी बनाता है बल्कि परिवार और समुदाय की आर्थिक स्थिति को भी मजबूत करता है।

पोल्ट्री पालन और प्रजनन में महिलाओं की भूमिका

(क) गृह आँगन कुक्कुट पालन

- ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ घर के आँगन में देशी मुर्गियाँ पालकर अंडे और मांस का उत्पादन करती हैं। यह न केवल परिवार की पोषण आवश्यकताओं को पूरा करता है बल्कि अतिरिक्त आय का साधन भी बनता है। स्थानीय नस्लें जैसे कड़कनाथ, गिरिराजा आदि रोग प्रतिरोधक होती हैं और कम लागत में अधिक लाभ देती हैं। महिलाएँ मुर्गियों की देखभाल, चूजों को पालने, और अंडों को संग्रहित करने में विशेष दक्ष होती हैं। इस प्रकार, पिछवाड़े पोल्ट्री महिलाओं के लिए एक सुलभ और टिकाऊ व्यवसाय बनकर उभर रहा है।

(ख) नस्ल सुधार और आर्थिक लाभ

- महिलाएँ पोल्ट्री प्रजनन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वे अच्छे मुर्गों और मुर्गियों का चुनाव कर नस्ल सुधार करती हैं। इससे अंडों की संख्या और गुणवत्ता दोनों में वृद्धि होती है। बेहतर नस्ल के पक्षियों से उत्पादित

अंडे और मांस बाजार में अच्छी कीमत पाते हैं, जिससे परिवार की आय में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। यह आय महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के साथ-साथ उनके आत्मविश्वास को भी बढ़ाती है।

आर्थिक महत्व

(क) आय और आत्मनिर्भरता

- महिलाओं की सक्रिय भागीदारी से पशुपालन और पोल्ट्री उत्पादन का आर्थिक महत्व स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। सुधरे हुए पशुओं और पक्षियों से दूध, अंडा और मांस उत्पादन में 20–30% तक वृद्धि देखी गई है। यह नियमित अतिरिक्त आय ग्रामीण परिवारों के लिए आर्थिक सुरक्षा का आधार बनती है। महिलाओं की इस आय में हिस्सेदारी उन्हें परिवार की आर्थिक निर्णय-प्रक्रिया में शामिल करती है और वे आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ती हैं।

(ख) गरीबी उन्मूलन

- महिलाएँ पशुपालन और पोल्ट्री से प्राप्त आय का उपयोग मुख्य रूप से बच्चों की शिक्षा, भोजन और स्वास्थ्य पर करती हैं। यह न केवल परिवार की बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करता है बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक मजबूत नींव तैयार करता है। इस प्रकार महिलाओं की भूमिका ग्रामीण समाज में गरीबी उन्मूलन और सामाजिक उन्नति की दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

(ग) स्थानीय नस्लों का संरक्षण

- महिलाएँ अक्सर देशी नस्लों के पशु-पक्षियों को बचाने और उनका पालन करने में अग्रणी भूमिका निभाती हैं। ये स्थानीय नस्लें जलवायु के अनुकूल होती हैं और रोगों के प्रति अधिक प्रतिरोधक क्षमता रखती हैं। इस प्रकार, महिलाओं का प्रयास न केवल आर्थिक लाभ सुनिश्चित करता है बल्कि दीर्घकालिक सामाजिक और पर्यावरणीय सुरक्षा का आधार भी बनता है।

सामाजिक और नीतिगत पहलू

(क) महिला स्वयं सहायता समूह (SHGs):

- देशभर में लाखों महिला SHGs पशुपालन, दुग्ध उत्पादन, बकरी पालन और पोल्ट्री व्यवसाय में सक्रिय हैं।
- सामूहिक प्रयास से महिलाएँ बेहतर नस्ल के पशु खरीदने, कृत्रिम गर्भाधान की सुविधा लेने और दूध-संग्रहण केंद्र स्थापित करने में सक्षम हो रही हैं।
- SHGs के माध्यम से वे बैंक से आसानी से ऋण प्राप्त करती हैं और विपणन में भी सहयोग पाती हैं।

(ख) सरकारी योजनाओं का सहयोग:

- **राष्ट्रीय पशुधन मिशन (National Livestock Mission):** महिलाओं को पशुपालन के लिए प्रशिक्षण, तकनीकी मार्गदर्शन और वित्तीय सहायता।
- **गोकुल मिशन:** स्वदेशी नस्लों के संरक्षण और संवर्धन पर विशेष बल, जिसमें महिलाओं की सक्रिय भागीदारी।
- **राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (NDDB) और डेयरी विकास योजनाएँ:** दुग्ध सहकारी समितियों में महिलाओं की सदस्यता और नेतृत्व को बढ़ावा।
- **राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM):** महिला SHGs को सूक्ष्म ऋण और बाज़ार उपलब्ध कराना।

(ग) क्षमता निर्माण और उद्यमिता:

- सरकार और विभिन्न NGOs द्वारा महिलाओं को पशुपालन, नस्ल सुधार, रोग प्रबंधन और विपणन पर नियमित प्रशिक्षण दिया जाता है।
- मोबाइल पशु-चिकित्सा सेवाएँ और कृत्रिम गर्भाधान केंद्रों की पहुँच महिलाओं तक आसान हुई है।
- इन प्रयासों से महिलाएँ केवल "पशुपालक" नहीं बल्कि "पशुपालन उद्यमी" बन रही हैं।

निष्कर्ष

ग्रामीण भारत की महिलाएँ पशुपालन और प्रजनन की अदृश्य शक्ति हैं। उनकी मेहनत और निर्णय-क्षमता ने न केवल दूध, मांस और अंडा उत्पादन में वृद्धि की है, बल्कि पूरे परिवार के पोषण और आय को भी सुदृढ़ किया है। स्थानीय नस्लों के संरक्षण से वे जलवायु अनुकूलन और रोग प्रतिरोधकता को सुरक्षित रखती हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि पशुपालन ने महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता, आत्मविश्वास और सामाजिक मान्यता प्रदान की है। इसलिए, भारत के पशुधन क्षेत्र के सतत विकास और "आत्मनिर्भर भारत" के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए महिलाओं की भूमिका को और मजबूत करना अनिवार्य है। इसके लिए उन्हें वैज्ञानिक प्रशिक्षण, वित्तीय संसाधन, बाजार तक पहुँच और नीति-निर्माण में प्राथमिकता देनी होगी। जब महिलाएँ पशुपालन में सशक्त होंगी, तभी ग्रामीण परिवार समृद्ध होंगे और देश का पशुधन क्षेत्र विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी बन सकेगा।